ANNUAL PROGRESSION
2016-17

Ex-tra An Organization

Experimental Theatre in Realistic Attitude

Correspondence Address

Ex-tra An Organisation C/O Ajeet Bahadur, 950/625 Allahabad,
Uttar Pradesh-211003
E-mail: extranorganization@yahoo.com
Mobile: 9695907532 / 8127254051
www.extran.org

उद्देश्य 2016-17

संस्था के क्रियान्वयन मंचों के माध्यम से भारतीय एवं अन्य रंगमंच कलाओं तथा रंग अभिनय के समकालीन परिस्थितियों पर विमर्श करना और इनका उत्कृष्ट प्रशिक्षण प्राप्त करना, ग्रीष्म कालीन बच्चों की रंगमंच कार्यशाला दो अलग-अलग स्थानों पर, तीन नए नाटक और एक लघु नाटिका का कार्यशालाओं के माध्यम से निर्माण तथा प्रस्तुति एवं भारतीय परिप्रेक्ष्य में रंग अभिनय कला का सौंदर्शस्त्रीय प्रतिमानों के निर्माण का अवसर बनाना।

वर्ष 2016 -17 की योजना

क्रम	माह	योजना	उद्देश्य
1	अप्रैल – जून 2016 -17	नयी प्रस्तुति परक कार्यशाला : क्षत्रिय नृत्य कार्यशाला, किताबें करती हैं बातें, ईदगाह, छुक-छुक खेल	संस्था के अभिनेताओं एवं सहयोगी अभिनेताओं के साथ इन कार्यशालों को करना और नयी नाट्य प्रस्तुतियों का निर्माण कर संस्था के अभिनेता सदस्यों में क्षमता संवर्धन का बढ़ावा देना। संस्था में अभिनय के साथ ही साथ निर्देशन के अवसर का बनाना। इसी क्रम में देश एवं विदेश के पारंपरिक नृत्यों का अभ्यास का अवसर बनाना संस्था सदस्यों एवं स्वैच्छिक सदस्यों के लिए ताकि अभिनेता अपने शारीरिक और आवाज़ संबंधी बारीकियों को जान सकें इनका उपयोग प्रयोग कर सकें। इसी क्रम में इस बार संस्था असम के क्षत्रिय नृत्य कार्यशाला का आयोजन कर रही है।
2	जुलाई –सितम्बर 2016 -17	विगत वर्ष के नाट्य प्रस्तुति का पुनः निर्माण कार्यशाला : एकलव्य	एकलव्य नाटक की तमाम प्रस्तुतियों से संभागी रंगकर्मियों के अनुभवों के आधार पर इस नाटक को पुनः निर्मित किया गया और देश के विभिन्न स्थानों में लगातार 9 प्रस्तुतियों को किया गया। पुनः निर्माण का मुख्य उद्देश्य यह रहा है कि नाट्य विषयवस्तु संप्रेषित हो तथा संस्था के और भी अधिक से अधिक अभीता जुड़ सकें। क्यों कि इस नाट्य प्रस्तुति में दर्शकों से नाट्य विषय वस्तु पर विमर्श करना नाट्य प्रस्तुति कि प्रक्रिया का एक अहम अंश भी है।
3	ओक्टोबर–दिसम्बर 2016 -17	विगत वर्ष के नाट्य प्रस्तुति का पुनः निर्माण कार्यशाला : ठाकुर का कुंवा इलाहाबाद स्थानीय दो विद्यालयों में कहानी कहना और रंगमंच विषय पर कार्यशाला	ठाकुर का कुंवा नाटक के संगीत कि पुनः संरचना के लिए इस नाटक के स्वरूप को संस्था के नए अभिनेता सदस्यों के साथ पुनः संरचना करना और मुंशी प्रेमचंद कि सामाजिक यथार्थवाद पर अभिनेता समूह का क्षमता संवर्धन करना। इलाहाबाद के स्थानीय दो विद्यालय में कहानी कहने और रंगमंच कि गतिविधियों का आयोजन करना ताकि इन विधायों में विद्यालय के छात्र व शिक्षक समूह अपना ज्ञान निर्माण कर सकें और कला का शिक्षा के साथ समन्वयन बैठ सकें।

			जिससे विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था में संवैधानिक मूल्यों का प्रसार किया जा सकें और हमारे वर्तमान समाज में बेहतरी कि दिशा में छात्र प्रत्यक्ष भूमिका ले सके। इन प्रकरियाओं में कहानी कहना और रंगमंच गतिविधि एक अहम माध्यम हो सकता है के साथ संस्था अपनी मान्यताओं से साथ इस कार्यशाला को निरूपित कर रही है।
4	जनवरी –मार्च 2016 -17	• संस्था सदस्यों के क्षमता संवर्धन की दिशा में रंगमंचीय तकनिकियों कि कार्यशाला • नए नाटक शेक्सपियर के हैमलेट का स्थानीय संदर्भों में रूपान्तरण करना • संस्था का वार्षिक बैठक: • रिवियू एंड प्लानिंग	संस्था में नाट्य निर्माणों और अन्य शैक्षणिक गतिविधियों की गुणवत्तापूर्ण निरंतरता के लिए मंच प्रकाश, सेट डिज़ाइन, कॉस्टयूम डिज़ाइन पर मुख्य रूप से देश से एवं संस्था के मित्रों की सहायता से इस तकनीकी क्षमता संवर्धन कार्यशाला को किया जा रहा है। संस्था के संसयोन के साथ संस्थ गुरु की तरफ से इस बार का समूहिक प्रस्ताव आया की हमें पूरब के साथ ही साथ अन्य देशों के नाट्य शैलियों से संस्था सदस्यों के क्षमता को संवर्धित करना चाहिए। इस पर बोर्ड की सामूहिक सहमति से पश्चिम से शेक्सपियर के नाटक हैमलेट का स्थानीय संदर्भों में अन्त्य रूपान्तरण कर इसका निर्माण करना तय हुआ है। प्रति वर्ष की भांति संस्था अनुभवों के आधार पर रिवियू और प्लानिंग करेगी। एवं इस वर्ष वेबसाइट के माध्यम से आलेख/विमर्श पत्र दर्शकों से साझा करने की योजना का निर्माण करेगी।

गुणवत्तापूर्ण सतत एवं व्यापक मूल्यांकन

2017 -18

क्रम	योजना	उद्देश्य	अंशदान के व्यापक संकेतक	संस्थागत आत्म विश्लेषण
1	नयी प्रस्तुति परक कार्यशालाएँ	संस्था के अभिनेताओं एवं सहयोगी अभिनेताओं के क्षमता संवर्धन व गुणवत्तापूर्ण नए नाट्य प्रस्तुतियों की निरंतरता को बढ़ावा देना	❖ संस्था के कलाकर्मियों द्वारा नाट्य प्रस्तुति प्रक्रिया में दर्शकों से नाट्य संवाद करना ❖ रंगमंच और समाज के अन्तः क्रियाओं पर आलेख साझा करना	अभिनेताओं द्वारा अर्जित अनुभवों को दर्शकों के साथ नाट्य निर्माण प्रक्रिया के दौरान साझा करने के अवसर और भी उपलब्ध होना है एवं स्वयं निर्देशन के क्षेत्र में स्व-निर्भर हुए। जिसका प्रमाण ईदगाह और छुक –छुक खेल जैस नाट्य प्रस्तुतियों से पता चलता है की संस्थ अपने इस ध्येय में एक सार्थक दिशा में विचरण कर रही है।
2	विगत वर्ष के दो नाटकों का पुनः निर्माण	संस्था के अभिनेताओं के साथ संस्था के द्वारा चलाए जा रहे मॉड्यूल जिसका मुख्य उद्देश्य है थिओरी और क्रिया का गैप कम करना और रंगमंच के क्षेत्र में एक उत्कृष्ठ सदस्यों के समूह के रूप में कार्य करना और रंगकला का प्रसार करना।	संस्था सदस्यों द्वारा विगत वर्ष के दो नाटकों एकलव्य और ठाकुर का कुंवा का पुनः निर्माण से संभागी सदस्यों में नाटक के सामाजिक और मानवीय मूल्यों के विकास के विचारधाराओं से रूबरू होना एवं इनका परीक्षण-निरीक्षण करना। जिससे संस्था सदस्य नाट्य प्रक्रियों के निर्माण में तर्कपूर्ण संगत बैठा पाने के आभास में खुद शामिल कार्ट पाएंगे। इसका उदाहरण यहाँ देखने को मिलता है की जब एकलव्य और ठाकुर का कुंवा नाटक प्रस्तुति के बाद दर्शकों से नाटक प्रक्रिया और विषय वस्तु पर संवाद होता है तो संस्था सदस्य अपने झिझक को छोड़ विमर्श में अंसग्दान करते हैं। यह संस्था के लिए एक बेहतर स्थिति का आभाष भी देता है और संस्था इस सकारात्मक प्रवृत्ति को और भी सार्थक दिशा में ले जाने के लिए निरंतर नितनए योजनाओं पर मंथन कर रही है।	
3	स्थानीय विद्यालयों में रंगकर्म	संस्था समय समय पर विद्यालयों में कार्य करती रही है। परंतु इस वर्ष संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार से सूचना मिलने के पश्चात इस कार्य को संस्था के वैतनिक अभिनेताओं ने भी अपने-अपने स्तर पर कार्य कराया किया। इससे आने वाले वर्ष में संस्था को विद्यालयों में भी एक स्थान मिला है। इस पर संस्था गंभीर रूप से इसका कार्य मॉड्यूल बना रही है ताकि बच्चों के साथ ही साथ शिक्षकों के साथ भी कार्य किया जा सके।	संस्था प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी स्थानीय दो मुख्य विद्यालयों में कार्यशालों का आयोजन किया। इस बार की कार्यशालों का मुख्य विषय : कहानी कहना और रंगमंच गतिविधियों में अपने अभिव्यति को विस्तार देना रहा है। इस दिशा संस्था ने माह फरवरी 2018 में इस कार्य को विद्यालयों को प्रस्तावित किया था लेकिन । राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से सूचना मिली की 15 नवंबर तक इस बार के परतिवेदनों को साझा करना है तो एक चुनौती सामने आ खड़ी हुई।लेकिन संस्था इस दिशा में निरंतर कार्य कर रही है और संस्था के रेपुटेशन में विस्तार हुआ है के लिए ही हम इस कार्य को अभी कर सकें हैं और वायपकता की बात करें तो कार्यशाला वाले विद्यालयों में छात्रों की तरफ से बार-बार इसको पुनः आयोजित करने की दिलचस्पी भी जताई है एवम विद्यालय परिवार ने इस कार्यशाला को पुनः आयोजित लिए संस्था को आमंत्रित किया है। यह संस्था के लिए एक सार्थक परिलक्षण हैं।	

2016 -17 में जो बेहतर क्रियान्वयन रहा...

1. क्षत्रिय नृत्य पर हमारा आभास एवं इसपर हमारी समझ और इसका रंग अभिनय में इंटीग्रेशन हो पाना।
2. संस्था के अभिनेताओं की सामाजिक विकास के विविध व्यावहारिक एवं निर्माणिक विचारधाराओं पर व्यापक समझा का बन पाना ।
3. संस्था के इलाहाबाद के स्वयं के रंग स्टुडियो का सौंदर्यीकरण आरंभ हो जाना एवं यहाँ नाट्य उपस्थापनाओं का भी आरंभ होना ।
4. तीन नए पूर्णाग नाटक एवं एक नए लघु नाटक का निर्माण एवं प्रस्तुति हो पाना अलग-अलग स्थानो एवं राज्यों में प्रस्तुति साझा हो पाना।
5. संस्था का अन्य राज्यों में रंगकर्म के विस्तार को सृजनात्मक फोर्स देना व संस्था के कार्यों का स्वैच्छिक स्थान बन पाना खास कर टोंक –राजस्थान में और बीकानेर में।

चुनौतियाँ 2016-17 :

संस्था इस वर्ष के योजना के अनुसार क्रियान्वयन को सफल बनाने में जिन चुनौतियों का महसूस कर पायी...

1. संस्था के पाँच अभिनेताओं के अलावा स्वैच्छिक अभिनेताओं का अधिक समय न मिल पाना जिससे नाट्य प्रक्रियाओं का समय बढ़ा।
2. संस्था में इस वर्ष कंसलटेंट निर्देशकों को आमंत्रित नहीं कर पाना ।
3. सहायक राशि का एकत्र ना होने से योजना अनुसार नाट्य उत्सव एवं संगोष्ठी का आयोजन ना हो पाना ।
4. अभिनेताओं एवं अन्य सदस्यों का अभिनय संबन्धित शैक्षणिक एक्सपोजर का टूर ना बन पाना।
5. संस्था में फूल टाइम कलाकर्मियों का की संख्या का कम होना।

लार्नींग्स :

वर्ष 2016-17 में निम्न लर्निंग्स बनी है...

1. संस्था के कार्यों का विस्तृत दस्तावेज़ बनाना और इसको संस्था के स्थायी दर्शकों के साथ साझा करना। ताकि रंगसमूह के विचार एवमा गतिविधियों से दर्शकों को लगातार अपडेट एवं क्रियनवायन के साथ जोड़ा जा सके।
2. संस्था नियमित रूप से नाट्य उपस्थापनाओं के इतर भी दर्शक संवाद मंचो को और भी अधिक क्रियाशील बनाएँ ।
3. विद्यालयों में होने वाले कार्यों को स्कूल समूह से मिलकर विद्यालय के कलेंडर में स्थान दिलवाना ।
4. स्कूल समूह के साथ ही साथ शिक्षक समूहों के साथ भी रंग कार्य करना जिससे शिक्षक इस विधा का अपने कार्य में उपयोग कर सकें।

एक्शन प्लान: 2017 -18

वर्ष 2017-18 में संस्था कला अनुसंधान एवं रंग शैक्षणिक संस्थान के रूप में अपनी बुनियाद बनाने के लिए विमर्शों को आरंभ करेगी। इस दिशा में संस्था जिन क्रियान्वयनों को स्थापित करेगी वह निम्न हैं:

1. 360° रंग संवाद (नाट्य उत्सव एवं संगोष्ठी) का दो चरणों में इलाहाबाद व बीकानेर में आयोजन
2. तीन नाटकों की प्रस्तुति परक कार्यशाला : टोंक जंक्शन, ठाकुर का कुवां (पुनः निर्माण), एकलव्य (पुनः निर्माण), स्वार्थ और मित्रता (क्षत्रिय नृत्यनाट्य), ईदगाह, छुक-छुक खेल,
3. इलाहाबाद में दो स्थानीय विद्यालयों में कहानी कहना और रंगमंच एवं अभिव्यक्ति प्रसार पर कार्यशाला
4. संस्था के सदस्यों की क्षमता वर्धन कार्यशाला एवं प्रशिक्षण
5. इलाहाबाद रंग इतिहास एवं परिदृश्य पर शोध आरंभ करना
6. संस्था द्वारा तैयार किए जा रहे अभिनय प्रक्रिया 'सिंबोलिक इंट्रेक्शन' पर दस्तावेज़ प्रसारित करना
7. संस्था द्वारा दो लघु शोध छात्रवृति की घोषणा करने हेतु। संदर्भ संस्थानों से इसके लिए अनुभव अर्जन करना एवं निर्णय बनाना।
8. इलाहाबाद में संस्था कार्यालय के पड़ोसी विद्यालयों में विगत वर्ष का फॉलो –अप चर्चा एवं नाट्य व कला कार्यशालाओं का आयोजन।
9. संस्था के कलाकारों के साथ ***नवरस*** के सैद्धांतिक पहलुओं पर साझा समझ बनाने के लिए एक मासीक कार्यशाला।
10. मांचोपयोगी रंगवस्तु के लिए कार्यशाला का आयोजन करना संस्था सदस्य और स्वैच्छिक कलाकारों के लिए।
11. इंडियन माइम संस्था कलकत्ता को एक्सट्रा एन ओर्गनाइज़ेशन संस्था के सदस्यों के लिए मुक अभिनय पर क्षमता संवर्धन हेतु प्रस्ताव देना।